ISSN : 0976-5255

शोध मंथन

VOL - IV

OCT 2013



PUBLISHER
Journal Anu Books, Meerut

ISSN: 0976-5255

शोध मंथन

हिन्दी जर्नल (पत्रिका)

Vol. 4 No. 2 Oct. 2013

सम्पादक:
ले0 डा0 अन्जुला राजवंशी
आर0जी0 पीजी कालिज, मेरठ

जर्नल अनु बुक्स
शिवाजी मार्ग, निकट आई0 बी0 पी0 पैट्रोल पम्प
मेरठ शहर–भारत

अनुक्रमणिका

1– सेवानिवृत्त वृद्धाओं की सामाजिक–आर्थिक–पारिवारिक समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन — 1
डा0 अंजुला राजवंशी

2–युवावर्ग में आत्महत्या की प्रवृत्ति : भारतीय परिप्रेक्ष्य में — 9
रूचि कक्कड़

3–गांधीवाद एवं उनके चिन्तन पक्ष — 17
डा0 नौशाबा परवीन
शहीरा जुबैर

4– महावीर अग्रवाल : व्यक्तित्व एवं व्यंग्य — 23
डॉ. रमेश टण्डन

5– हिन्दी साहित्य के इतिहासों का इतिहास दर्शन — 29
डा0 भूपेन्द्र हरदेनिया
निहारिका शर्मा

6–महिला मानवाधिकार : वर्तमान परिदृश्य — 49
ओमप्रकाश यादव

7–"भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में औद्योगिक श्रमिक वर्ग का योगदान : ऐतिहासिक विश्लेषण" (1920–1947 ई0) — 53
दीपक कुमार

8–"जाट राज्य भरतपुर के सुरक्षा प्रबन्धों का सैन्य विश्लेषण" — 59
डा0 बी0पी0 सिंह
प्रेम सिंह

9– युवा ऊर्जा के प्रतीक स्वामी विवेकानन्द — 73
डॉ. रजनी दुबे

10–केदारनाथ सिंह के काव्य में लोक संस्कृति — 77
डा0 सुरेश बी पाटिल

4 महावीर अग्रवाल : व्यक्तित्व एवं व्यंग्य

डॉ. रमेश टण्डन*

सारांश

बात–बात में गगनभेदी ठहाका लगाने वाले, एक सांस में अर्द्धशतक गुपचुप डकार देने वाले, हजार से अधिक लेखकों के इण्टरव्यू ले चुके, अखाड़ेबाज, पत्नीव्रतधारी, गरिमा, गौरवयुक्त संतोषमय महावीर इतने सात्विक हैं कि चाय तक नहीं पीते; बलिष्ठ एवं नाटे कद के मालिक को उछल कर घोड़े की पीठ पर बैठना एवं सवारी करना बहुत प्रिय था। चांद टरे, सूरज टरे और जगत व्यवहार टर जाए पर आप अपनी सोच से डिग जाएं, ऐसा कम ही होता है। धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, मानव प्रवृत्तिगत एवं नारीगत विद्रूपताओं को प्रमुखतया आपने अपने व्यंग्य निबंधों में स्थान दिया है। इक्कीसवीं सदी के दुष्प्रभाव को उजागर किया है। धर्म के बहाने अभद्रता, पश्चिमी सभ्यता के पीछे अश्लीलता आदि को रेखांकित करते हुए एक सफल व्यंग्यकार की भूमिका को आपने बखूबी निभाया है।

व्यक्तित्व

पिता श्री जयनारायण अग्रवाल एवं माता श्रीमती मायादेवी अग्रवाल के घर आपका जन्म 25 मई 1946 को ग्राम – कुरूद, जिला – रायपुर में हुआ। ग्रीटिंग कार्ड के अंत में आप लिखते थे – आपका, गरिमा गौरव युक्त संतोषमय महावीर। यहाँ गरिमा, आपकी पुत्री; गौरव, आपका पुत्र; संतोष, आपकी पत्नी एवं महावीर, स्वयं हैं। आपकी शिक्षा एम. काम., पी–एच. डी. है।

*(सहायक प्राध्यापक), महात्मा गांधी शा.महाविद्यालय खरसिया

दौड़ते हुए घोड़े की लगाम थामकर उसकी पीठ पर उछल कर बैठना और सवारी गांठना आपको प्रिय था। दण्ड बैठक लगाते हुए किशोरावस्था तक आपके छोटे–से शरीर में चट्टान–सी मजबूती आ गई थी। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखाओं में प्रातः 4 बजे जब हाथ में लाठी होती थी, तो आपके करतब अनोखे होते थे। आप अखाड़ेबाज भी थे।

आप सतजुगी जीव हैं। चाय नहीं पीते; शराब का तो सवाल ही पैदा नहीं होता, न पीते और न पिलाते। पान–बीड़ी, तम्बाकू जैसे व्यसन आपके पास नहीं फटकते। लंगोट के ऐसे पक्के कि हर पराई नारी को इस कदर माँ–बहन मानते हैं कि विवाहोपरान्त कोई भद्र महिला और विवाह पूर्व कोई कन्या आपसे प्रणय निवेदन करने का साहस नहीं कर पायी। आप परम पत्नी–भक्त हैं। यहाँ रामचन्द्र शुक्ल जी द्वारा दी गई 'भक्ति' की परिभाषा को याद करना अपेक्षित होगा – 'पत्नी–मुख–चन्द्र के ऐसे चकोर कि श्री देवी और माधुरी दीक्षित या ऐश्वर्या राय और सुष्मिता सेन में फर्क नहीं कर पाते।' दुर्व्यसनों के त्याग की कसर आप ऐसे सात्विक, पौष्टिक जो सुस्वादिष्ट हो, भोजन से पूरी करते हैं। एक समय था जब आप एक–एक सांस में 35–40 से लेकर सैकड़ा तक गुपचुप खुलेआम उदरस्थ कर जाते थे। जो व्यक्ति श्रद्धापूर्वक खिला न सके वह आपकी दृष्टि में, प्रसाद जी की शैली में कहें तो – 'क्षीव, क्लीव, क्षुद्र और कीड़े से भी अपदार्थ है।' प्रत्यक्ष दर्शन में आपकी ऊँचाई बहुत कम है लेकिन रणनीति के तहत आप अपनी ऊँचाई का अन्दाजा किसी को लगने नहीं देते। आप ऐसे कई लोगों को 'सर' का सम्बोधन देते हैं, जिन्हें आप लेड़गा या लबाढू समझते हैं।

आपका लक्ष्य डिप्टी कलेक्टर बनने का था। मध्यप्रदेश सिविल सर्विस की परीक्षा में दो बार बैठे, पर साक्षात्कार में लटक गये। आपको शक है कि कपड़े और चश्मे का फ्रेम आपके अनुरूप नहीं थे।

चांद टरे, सूरज टरे और जगत व्यवहार टर जाए पर आप अपनी सोच से डिग जाएं, ऐसा कम ही होता है। संजीवनी लाने के लिए पूरे पहाड़ उखाड़ लाने में आप विश्वास करते हैं, इसीलिए हिन्दी जगत में नामी–गिरामी भी आपके पराक्रम से भय खाते हैं। मूड में रहने पर दूसरों के वार को सहर्ष झेल जाने वाले, बिफरे होने पर वाही–तबाही मचाने पर उतारू होने वाले, बात–बात पर गगनभेदी ठहाके लगाने वाले, मस्त रहने वाले अनोखे व्यक्तित्व के मालिक हैं आप।

एक हजार से अधिक इण्टरव्यू ले चुके हैं और आपने कहा कि हिन्दी में लगभग ढाई हजार लिखने वाले हैं। इण्टरव्यू के सम्बन्ध में यह मत सटीक बैठता है कि 'कभी ऐसा दृश्य भी देखना आपके नसीब में हो सकता है कि भारत का कोई महान लेखक टॉयलेट में निपट रहा हो और महावीर जी बाहर से प्रश्न कर रहें हैं जिसका उत्तर लेखक महोदय कॉख–कॉखकर दे रहे हैं।'

यह वाकया 1973 का है जब आप बालोद के स्कूल मे नए–नए अध्यापक बने थे। 10वीं कक्षा पढ़ा रहे थे। तीसरी बैंच के दो बालक आपस में फुसफुसा रहे थे। आपको बुरा लगा, फूर्ति से वहाँ जा पहुँचे। एक भरपूर तमाचा लड़के को साधकर धर दिया। मगर लड़का चेहरा हटाकर बच निकला और पांचों उंगली के निशान बने बगल में बैठे बालक के गाल में। मार से बच जाने के बावजूद वह लड़का सिहर उठा। उस लड़के को, भीतर बैठे भय से 30 साल बाद भी मुक्ति नहीं मिली है। वह लड़का अब लोक मंजरी और रिसाली थियेटर का महासचिव एवं कला परम्परा का संपादक डी. पी. देशमुख है। वह जब भी आप से मिलता है, दूर खड़े होकर बात करता है।

आपका पता – ए–14, आदर्श नगर, दुर्ग– 491003 है।

व्यंग्य

आपके व्यंग्य संग्रह – 'लाल बत्ती जल रही है', 'गधे पर सवार इक्कीसवीं सदी', 'एक लुहार की' आदि हैं।

परिचय सम्मेलन के चौंचले पर आपकी लेखनी बखूबी चली है –

"परिचय सम्मेलन में भूलकर भी कोई लखपति अपने लाड़ले बेटे के लिए छोटे घर की लड़की पसंद नहीं करता। और न ही अपनी लड़की बेरोजगार लड़के के हाथ सौंपता।"(1)

विद्युत विभाग एवं उसकी ऊर्जा – आपूर्ति पर आपने मानवीकरण करते हुए व्यंग्यार्थ किया – "बिजली रानी से बार–बार हम कहते हैं। बुढ़ापे में अब यूँ रूठा न करो। शादी के पचास बरस कम नहीं होते। हमें अब इक्कीसवीं सदी में जाना है और तुम नखरे करती रहती हो।"(2)

आपके व्यंग्य निबंधों में कथोपकथन के माध्यम से इक्कीसवीं सदी की नंगी तस्वीरों (सभ्यता) को उघाड़ा गया है –

"गर्दभराज बोले : अरी —— ओ बिजली। क्यों नखरे करती हो ? देख बीसवीं सदी बीत रही है और हम इक्कीसवीं सदी में जाने की तैयारी कर रहे हैं। अब तू कुलवधू की तरह ठीक–ठीक आचरण कर।

बिजली रानी उवाच : मैं तो चली टी. वी. देखने। वाल्यूम बढ़ाकर नाचूँगी और अपने गधे को नचाऊँगी।

गर्दभराज उवाच : दूरदर्शन दूर से ही अच्छा है री। दिन हो या रात, वह तो चूमा–चाटी दिखाता है। फिल्मों में कैबरे और स्वीमिंग पुल में नंगी हीरोईन को क्या देखना ?

बिजली रानी उवाच : तुम इसका मजा क्या जानो ? जाओ मक्खन लगाओ।"(3)

शिक्षा विभाग एवं उसके शिक्षा शास्त्रियों पर मुहावरा करते हुए उनकी कार्य प्रणाली को आपने निशाने पर लिया है – "हजारों की संख्या में स्कूल खुले और आधा देश निरक्षर है। शिक्षा शास्त्री का काम सूअर की तरह यहाँ – वहाँ मुँह मारना रह गया है।"(4) पुनः मुहावरे के माध्यम से, गंगा–यमुना–सरस्वती नदी के संगम पर लगने वाले कुंभ मेला में आए नारियों एवं कुंभ में होने वाले लूट का वर्णन आपने कुछ इस तरह से किया –

"नव पल्लवित कोपलों की तरह कोमल किशोरियों के साथ–साथ आम के मौरों की तरह यौवन भार से लदी रमणियों और ठूँठ की तरह सूखा कुबड़ी वृद्धाओं का संगम पूरे मेले में तैर रहा था।" एवं "कोई कह रहा था कि मिट्टी के घड़े को कुम्भ कहते हैं। कोई कह रहा था गंगा स्नान को कुम्भ कहते हैं। पंडों द्वारा लूटा गया एक ग्रामीण बेचारा बोल रहा था – भाई लूट–खसोट का ही दूसरा नाम कुम्भ है। यहाँ मंदिरों में प्रसाद बिकता है। भगवान के दर्शन के लिए भी घूस देनी पड़ती है। एक नेतानुमा आदमी बोल रहा था – सरकारी कार्यालयों में आफिसरों की जिस तरह काकागिरी चलती है उससे बढ़कर दादागिरी कुम्भ पर्व में पंडों की रहती है।"(5)

भारतीय संस्कृति एवं धर्म के नाम पर लोगों के विरोधाभास कृत्य की आपने तीव्र आलोचना की है– "भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता का दावा करने वाले 'गणेशोत्सव' पर 'गणपति बप्पा मोरिया' गाते हैं और मनोरंजन के नाम पर समिति कैबरे करवाती है। डिस्को डांस प्रतियोगिता का आयोजन करते हैं। 'नवदुर्गा' की स्थापना के समय 'रेशमा जवान हो गई है' और 'चोली के नीचे क्या है' जैसे फिल्मी गीत बजाते हैं।"(6)

अस्पताल की प्राथमिकता पर आपने व्यंग्य किया, "इक्कीसवीं सदी में गरीबी बहिन बनकर और अकाल भाई बनकर उसके साथ हैं। अस्पतालों में नसबन्दी और लूप को प्रायरटी है। मरीज मरते हैं

– मरते रहें। इक्कीसवीं सदी में इसी तरह जनसंख्या कम की जानी है।"(6)

आकाशवाणी में महिलाओं की अति प्राथमिकता पर ध्यान आकृष्ट करने की कोशिश की गई है –

"आकाशवाणी में तो चारों ओर लड़कियों के लिए हाहाकार मचा हुआ है। बिंदिया हो या पल्लवी, बालसभा हो या वार्ता, सुगम संगीत हो या शास्त्रीय जिसे देखो लड़कियों को अनुबंध देने को अकुलाता है। नाटक हो या चौपाल, गीत गाना हो या कहानी पढ़नी हो एक अदद महिला जरूरी है।"(6)

संदर्भ

1.अग्रवाल, महावीर (संपादक) : व्यंग्य सप्तक – दो, पृ. 390 (इक्कीसवीं सदी में परिचय सम्मेलन)

2.अग्रवाल, महावीर (संपादक) : व्यंग्य सप्तक – दो, पृ. 385 (गधे पर सवार इक्कीसवीं सदी)

3.अग्रवाल, महावीर (संपादक) : व्यंग्य सप्तक – दो, पृ. 385–386 (गधे पर सवार इक्कीसवीं सदी)

4.अग्रवाल, महावीर (संपादक) : व्यंग्य सप्तक – दो, पृ. 386 (गधे पर सवार इक्कीसवीं सदी)

5.अग्रवाल, महावीर (संपादक) : व्यंग्य सप्तक – दो, पृ. 389 (बोल राधा बोल)

6.अग्रवाल, महावीर (संपादक) : व्यंग्य सप्तक – दो, पृ. 386 (गधे पर सवार इक्कीसवीं सदी)